

◆ ग्रास्मानेर सूत्र (Grassmann's Law) :

मूल भाषार मृष्ट व्यञ्जनेर जार्मानिक शाखाय ध्वनिपरिवर्तन ग्रीमेर सूत्र द्वारा सम्पूर्ण व्याख्यात हय नि। ग्रीम् स्वयं ए विषये सचेतन छिलेन। ग्रीमेर सूत्रेर द्वारा किछु किछु पदे ध्वनि परिवर्तनेर व्याख्या मेले न। उदाहरणरापे संकृत व॒द्ध के ग्रहण करा पदे ध्वनि परिवर्तनेर व्याख्या मेले न। उदाहरणरापे संकृत व॒द्ध > इंराजि बाइंड (bind)। ए हुले मने राखा प्रयोजन येते पारे�। संकृत व॒द्ध > इंराजि बाइंड (bind)। ए हुले मने राखा प्रयोजन येते पारे�। सुतराँ जार्मानिक शाखार मृष्ट व्यञ्जनिपरिवर्तनेर इंराजिओ जार्मानिक शाखारह एकठि भाषा। सुतराँ जार्मानिक शाखार मृष्ट व्यञ्जनिपरिवर्तनेर इंराजिओ जार्मानिक शाखारह एकठि भाषा।

नियम इंराजि भाषार क्षेत्रेऽप्रयोज।

ग्रीमेर सूत्र अनुयायी 'व॒द्ध' एर 'व' (बर्गेर तृतीय वर्ण) प्रथम वर्णे परिणत हওया उचित छिल। किन्तु बास्तवे ता घटे नि। एই धरणेर व्यतिक्रमेर व्याख्या दिलेन ग्रास्मान (W. Grassmann)। तिनि जानालेन संकृत 'व॒द्ध' एर प्रथम व्यञ्जनध्वनि 'व' के मूल भाषार प्रथम ध्वनिर सঙ्गे अभिन्न मने करार फलेह एই बिपत्ति। आसले खুब सন्तुष्ट भाषार प्रथम ध्वनिर सঙ्गे अभिन्न मने करार फलेह एই बिपत्ति। सुतराँ भेद्ध > संकृते व॒द्ध > इंराजिते 'बाइंड' (bind) ए परिवर्तन तो ग्रीमेर सूत्रेरह अनुसारी। बस्तुः विषमीभवनेर फलेह व॒द्ध, बाइंड इत्यादि व्यतिक्रम।

ग्रास्मानेर सूत्राटि हलो :

मूलभाषार कोनও पदे पाशापाशि दुटि अक्षर महाप्राण ध्वनि थाक्ले, तादेर एकठि (प्रायाह अल्पमति) अल्पप्राण ध्वनिते परिणत हযेछে ग्रीक एবং आर्याशाखाय। ग्रीक भाषाय अबश्य सघोष व्यञ्जनध्वनि प्रथमे अघोष व्यञ्जनध्वनिते परिणत हযेछে, तारपर हযेछে अल्पप्राण व्यञ्जन ध्वनि ड > ब > प। ग्रीक भाषार एই त्रै।

ग्रास्मानेर सूत्रेर आരও क्योकटि उदाहरण :

आनुमानिक मूल शब्द भेदउধ > संकृत बोध, गथिक बिन्दन (bindan), ग्रीक पेटौथ।

मूलभाषा भेदउধोमाइ (Bheudhomai), ग्रीक पेटौথोमाइ, संकृत बोधामि।

मूलभाषा धुघतेर (Dhugther) ग्रीक युगतेर, संकृत 'दुहिता' इत्यादि।

प्रसঙ्गक्रमे संकृते धा, फल, भा, भृ, भृ प्रভृति धातुर अভ्यष्ट रूपগুলি ग्रास्मानेर सूत्रकेह स्मरण करियो देय। यथा— धा > दधाति, दधति, दधामि, दधौ इत्यादि ; फल > पफाल ; भा > बভौ, भृ > बভूब, बভूबতूঃ, बভूবুঃ ; भृ > बिभृति, बভार इत्यादि। अথচ उল्लिखित धातुগুলিহ अनভ্যষ्ट अবশ्याय धন्ते, फलতि, भाति, भवति, भবामि प্ৰভৃতি রূপ হয়। আবাৰ ধুধ > ডে়েস্যতি। এ হুলে লক্ষণীয় যে পূৰ্ব অক্ষরের মহাপ্রাণস্ব অক্ষুন্ন আছে কিন্তু দ্বিতীয় অক্ষর 'ধ' হ'িরিয়েছে তার মহাপ্রাণস্ব, অল্পপ্রাণ হয়ে হয়েছে 'ত'।

সুতরাঁ বলা যায়, प्रथम अक्षराटि महाप्राणरापे रक्षित हले द्वितीय अक्षरেर महाप्राणटि अবশ्यই অল্পপ্রাণে পরিণত হবে।